श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - १

जून २०२३
गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. प्रभु के शासन में ..... को मुख्य रखने में आया है ।
२. अव्यक्त मिथ्यात्व ..... है याने अज्ञान तुल्य जानना ।
३. मनक को पिताजी संयभवसूरि..... में मिले ।
४. दंडक प्रकरण ग्रंथ के अभ्यास के लिये.....अधिकारी हैं ।
५. अंधकार काला होता है इसलिये इसके ..... स्वरुप निकलता धुंआ काला ही होगा न !
६. संसार दुखमय..... एवं स्वार्थमय है ।
७. सत्य तत्वरुप एक..... ही है ।
८. जंबुस्वामी की पाट पर ..... आये ।
९. ..... को जीतने वाले जिन कहलाते हैं ।
१०. ..... याने जैन साधु साध्वीजी भगवंतो की आहार लेने की विधि ।
११. जीव ..... कर के सम्यग् दर्शन को स्पर्श करता है ।
१२. पूज्यपाद प्रभवस्वामी ने..... का उपयोग कर योग्य पट्टधर हेतु शोध का प्रारंभ किया ।
१३. सभी धर्म सच्चे हैं, ऐसी समझ अथवा बुद्धि वह..... है ।
१४. भव्य जीवों को..... महल में चढने के लिये चौदह गुणस्थानकों की श्रेणी कही है ।
१५. श्रावक के द्वार..... कहलाते हैं ।
१६. ..... के शुद्ध पालन हेतु साधु आहार करता है ।
१७. जंबुकुमार के पिता का नाम..... था ।
१८. मिथ्यात्व से मोहित जीव..... को जानता नहीं ।
१९. श्रावक साधु को गोचरी पानी का लाभ देने की विनंती करता है तब साधु को ..... कहने की विधि है ।
२०. गुणस्थानक क्रमारोह ग्रंथ के रचयिता श्रीमद् ..... हैं ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. जीवन विकास में किसका अद्‌भूत योगदान है ?
२. पूर्व में से श्रुतसार का संकलन करने वाले प्रथम जैनाचार्य कौन थे ?
३. परमात्मा का मार्ग कैसा है ?
४. श्री पार्श्वनाथ प्रभु के चरण युगल किसका नाश करने वाले हैं ?
५. इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र के मानवो के लिये मोक्ष के द्वार किसने खोले ?
६. छठवे गुणस्थानक का नाम क्या है ?
७. प्रगट सिद्ध मंत्र क्या है ?
८. ग्रंथ की सफलता व निर्विध्न पूर्णाहूति के लिये ग्रंथकार क्या करते हैं ?
९. सास्वादन से मिथ्यात्व गुणस्थानक जाने से पहले जीव किसका वमन करता है ?
१०. नमिउण स्तोत्र की सातवीं गाथा में प्रभुजी को कौनसी उपमा दी गई है ?
११. आत्मा का स्वभाव सदा किसमें रहने का है ?
१२. "मयणं" याने क्या ?
१३. कैसे निमित्तों से संसारी जीव प्रसन्न होते हैं ?
१४. उपशम सम्यकत्व की प्राप्ति किससे होती है ?
१५. जंबुकुमार ने किसकी देशना से वैराग्य पाया ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. कूलं २) संखित ३) गेह ४) नेरइया ५) आगई ६) सिग्धं ७) लेस ८) शैलमौले ९) दिठ्ठी १०) फूलिंग ११) पओहीं १२) ववगय १३) संसई १४) जीहालं १५) ज्ञायते १६) भूअंग १७) किलामेई १८) संभरंति १९) पुप्फं २०) सुणेह

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) प्रभव चोर	१) असंज्ञी जीव	६) भव्यजीव	६) अवस्वापिनी विद्या
२) अनाभोगिक मिथ्यात्व	२) अज्ञान द्वार	७) विच्छेद	७) यज्ञ स्तंभ
३) असमाधि	३) सद्‌गति	८) राजगृही	८) धारिणी
४) ठाणांग सूत्र	४) उपशम श्रेणी	९) श्री शांतिनाथ मूर्ति	९) मिथ्यात्व के दस प्रकार
५) दंडक	५) सास्वादन गुणस्थानक	१०) तपोवृद्धों की सेवा	१०) अपवाद मार्ग

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. दीक्षा के समय प्रभव की उम्र कितने साल की थी ?
२. तिर्यंच गति के दंडक कितने हैं ?
३. सास्वादन गुणस्थानक पर उदय में कितनी प्रवृति होती है ?
४. कितने कारणों से साधु आहार करते हैं ?
५. शय्यंभवसूरि का संपूर्ण आयुष्य कितने साल का था ?
६. कुल दंडक कितने हैं ?
७. शय्यंभवसूरि ने मनकमुनि को "दशवैकालिक" सूत्र का अभ्यास कितने दिन कराया ?
८. जंबुकुमार का केवली पर्याय कितने साल का है ?
९. सास्वादन गुणस्थानक पर कितनी कर्मप्रकृति सत्ता में हैं ?
१०. वीर प्रभु और जंबुस्वामी के निर्वाण में कितने साल का अंतर है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. जंबुकुमार ने सधुर्मास्वामी के पास सम्यकत्व सहित ब्रह्मचर्य व्रत का स्वीकार किया था ।
२. धीमी बारीश मे दो कामली ओढकर साधु गोचरी जा सकते हैं ।
३. सास्वादन से नीचे गिरते भी जीव को सम्यकत्व का अंश होता है ।
४. शय्यंभवसूरि जिनकल्पी महात्मा थे ।
५. अंतरकरण सम्यकत्व जीवन में अनेकबार प्राप्त कर सकते हैं ।
६. भवनपति के दस दंडक हैं, जबकि वैमानिक देवों का अेक ही दंडक है ।
७. सिद्धान्त का विचार वह ज्ञान है, वह सुखसमृद्धि का साधन है ।
८. इच्छापूर्ति के लिये साधु इच्छित घर से गोचरी वापर सकता है ।
९. मनुष्य बनना यह भी एक प्रकार का दंड ही है ।
१०. प्रभवस्वामी मनःपर्यवज्ञानी थे ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. साधु को गोचरी पानी का लाभ देने की विनंती करना यह श्रावक का कर्तव्य है ।
२. हे मात तात ! अब क्षणभर भी संसार में रहने की इच्छा नहीं है ।
३. चौबीस द्वार रुप अति संक्षिप्त संग्रहणी इस तरह है ।
४. किसी पावन क्षण में सारे घनघाती कर्मों का चूरा करके केवलज्ञान एवं केवल दर्शन प्राप्त करते हैं ?
५. श्री पार्श्वनाथ प्रभु के चरण युगल को नमस्कार करके मैं यह स्तवन कहुंगा ।
६. उपशम सम्यकत्व प्राप्त करने के लिये जीव तीनकरण करता है ।
७. वीर शासन की गरिमा टीकी रहे ऐसा पट्टधर लाना कहाँ से ?
८. धर्म में अधर्म बुद्धि ।
९. साधु जीवन को पाने से पहले और बाद में भी यह प्रत्येक मुमुक्षु के संयम जीवन का आधार स्तंभ है ।
१०. कितनी सूक्ष्म दृष्टि थी अपने केवली भगवंतो के पास एवं पूर्वाचार्यों के पास ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. साधु आहार किसलिये करते हैं ? २) पाँच प्रकार के मिथ्यात्व समझाओ ।
३. गति की अपेक्षा से चौवीस दंडक समझाओ । ४) प्रभव की अंतिम चोरी का महत्व ।
५. कैसे भयंकर समुद्र में कौन इच्छित किनारे (तट) को प्राप्त करते हैं ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com